आर्योदय

ARYODAYE

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 325 ARYA SABHA MAURITIUS *19th Jan. to 31st Jan. 2016*

अघमर्षण मंत्रः / पाप का मर्दन

AGHAMARSHAN MANTRAS

L'ANNIHILATION DES PÉCHÉS

ओ३म् ऋतं च सत्यं चाभी द्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्य जायत ततः समुद्रोऽअर्णवः

ऋग्वेद १०/१६०/१

Om ! Ritam cha satyam chābhi dhātapasso dhyajāyata.
Tatto rātrayajāyata tatah samudro arnavah.

Rig Veda 10/190/1

ओ३म् समुद्रादर्णवादधि संवत्सरोऽअजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।।

ऋग्वेद १०/१६०/२

Om! Samudrādarnavādadhi Samvatsaro ajāyata.
Ahorātrāni Vidadhadvishwasya mishato vassi.

Rig Veda 10/190/2

ओ३म् सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।।

ऋग्वेद १०/१६०/३

Om! Suryāchandramasaw dhātā yathāpurvamkalpayata.
Divam cha prithivim chantarikshamatho swaha.

Rig Veda 10/190/3

Glossaire / Shabdārtha :

Abhiddhāta : qui illumine / éclaire le monde et tout l'univers; **Tapasah** : (i) Toute la pensée ou connaissance qui est immédiatement traduite en action. C'est seul Dieu qui peut le faire, pas l'homme.

(ii) L'apport ou la contribution du Seigneur dans la création de l'univers, l'effort divine

Ritam : les lois sociales; **Cha** : et; **Satyam** : les lois éternelles et les principes de la moralité; **Adhi ajāyata** : apparaître clairement, se mettre en évidence, se manifester; **Ratryajāyata** : La nuit ('āhorātri' en Sanskrit) dans le contexte de ce verset, cela veut dire toute la durée de la dissolution complète de l'univers ('Pralaya' en Hindi) où règne une obscurité totale.

En d'autres mots, L'univers, se retrouve dans son état originale (avant la création) :- la matière élémentaire primordiale ('prakriti' en Hindi) en forme de la nébuleuse – une masse épaisse et confuse.

Le contraire : c'est le jour ('ahodin' en Sanskrit). C'est toute la durée de la création ('shristi' en Hindi) où il y a la lumière/ une luminosité parfaite et la vie dans tout l'univers créé par le Seigneur.

Tatah : L'engagement du Seigneur dans ce même élan afin d'accomplir cette tâche immense qui est la création, la gestion et la dissolution de l'univers; **Arnavah :** En action, en évolution; **Samudrah :** 'ākāshiya samudra' en Hindi, une traduction littérale serait 'L'océan céleste' - Mais dans le contexte de ce verset cela veut dire quelque chose qui ressemble à l'éther ou à la nébuleuse ('Virat' ou 'Hiranyagarbha' en Sanskrit) :-

Une note à propos du mot « Samudrah » dans ce verset du Rig Veda pour soutenir notre interprétation :-

Après l'étude des Vedas et surtout le 'Purush Sukta' et le 'Hiranyagarbha Sukta' du Rig Veda, le grand savant védique Dr Satyavrat Sidhāntalankār, Mārtanda, ancien Vice Chancelier de L'université du Gurukul Kāngri, membre du Rajya Sabhā et auteur du livre 'Veda Gangā', nous démontre que le mot 'samudra' dans le contexte de ce verset du Rig Veda veut dire 'la nébuleuse'. Ref. : Veda Ganga pp. 104, 105, 109, 110.

Cet assertion est conforme à l'enseignement du Swami Dayanand dans Satyartha Prakash – (chapitre « La Cosmogonie ».

Ajāyata : se produit; **Prakriti** : la matière élémentaire primordiale; **Ishwara** : Dieu; **Jiv/ātmā**: l'âme (Dans ce contexte 'ātmā' ou 'jiv' est un nom collectif qui signifie toutes les âmes, car il y en a plusieurs, mais il y a qu'un seul Dieu); **Samvatsara :** le temps – L'année, jour, nuit, l'heure etc.; **Mishatah :** dynamiser, activer, mettre en branle/mouvement; **Vishwashya** : le monde / l'univers; **Vashi** : Le Seigneur / Dieu, le Maître Suprême de l'univers; **Aho rātrāni** : La notion du jour et de la nuit , c'est-à-dire, la notion du temps; **Vidadhat** : créa; **Dhātā** : Dieu, le créateur de l'univers; **Suryāchandramāsaw :** le soleil, la lune, etc.; **Yathāpurvam** : tout comme dans la création précédente; **Divam** : les corps lumineux dans l'espace, les astres; **Prithivim** : la terre; **Antariksham:** l'espace / le ciel; **Yatha** : de la même façon, **Swaha** – les corps lumineux du ciel ont été crées par le Seigneur. ***cont. on pg 2***

N. Ghoorah

COMMUNIQUE

28.01.2016 : DEMISE OF ACHARYA BALDEV JI

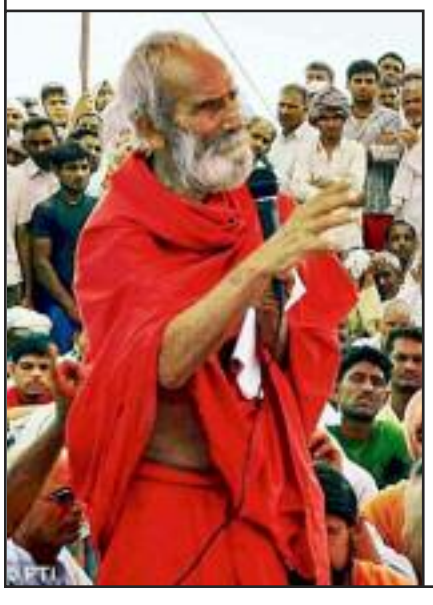

It is with deep regret that we learnt of the demise of Acharya Baldev Ji at the age of 84. Already of a frail health over the past 2-3 years, he suffered serious injuries and heavy blood loss after a fall during his morning walk on Thursday 28 January 2016 and he breathed his last in the afternoon at the Post Graduate Institute of Medical Sciences (PGIMS), Rohtak.

In 1959 he renounced his home and dedicated his life to the awakening of the masses on the universal Vedic values. He had served various Gurukuls, more prominently those at Kalva and Jhajjar for over decades. He also used to look after cows and was instrumental to the setting up of several gaushālas in Haryana.

He also served as President of the Haryana Arya Pratinidhi Sabha for several years and served the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha for a couple of years in the first half of the current decade.

In his condolence message Haryana Chief Minister described Acharya Baldev Ji as a noble person who remained associated with Arya Samaj and Gurukul.

Please find in this issue the homage paid to Acharya Baldev Ji by Dr. O.N. Gangoo for and on behalf of Arya Sabha Mauritius which was emailed to Shri Vinay Arya of the Sarvadeshik Arya Pratinidhi Sabha

Editorial Team

सम्पादकीय

ज्ञान की खोज में

ज्ञान प्राप्त करना मनुष्य का धर्म है। परमात्मा ने इन्सान को ज्ञान हासिल करने का भाग्य दिया है। अच्छी शिक्षा किसी से भी मिले तो उसे तुरन्त ग्रहण कर लेना चाहिए। एक शत्रु भी अच्छी सलाह दे तो उसे स्वीकार कर लेना चतुरता है ।

सही ज्ञान प्राप्त करने की कोई सीमा नहीं होती है। कोई अवस्था नहीं होती है। आदमी अपने जीवन के अन्तिम समय तक कुछ न कुछ सीखता रहता है फिर भी उसे पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति नहीं होती है। एक शिक्षार्थी विद्या के क्षेत्र में जितना कदम बढ़ाता जाता है, उसकी उतनी ही बौद्धिक, मानसिक, चारित्रिक और आध्यात्मिक उन्नति होती जाती है और एक दिन महाज्ञानी बनकर सर्वत्र यशस्वी हो जाता है।

सही शिक्षा ग्रहण करने से हमारी बुद्धि तीव्र होती जाती है। हमारी मनोवृत्तियाँ शुद्ध हो जाती हैं। हमारे विचार, कर्म और स्वभाव श्रेष्ठ हो जाते हैं। ज्ञान-विज्ञान की प्रक्रिया जारी रखने से मानव-जाति का उत्थान होता जाता है। आज के इस नवीनयुग में शिक्षा का बड़ा ही महत्व है। ज्ञान के अभाव में आज उन्नतिशील होना बड़ा कठिन है ।

आज के इस वैज्ञानिक और नवीन तकनीकी युग में अपनी संतानों को शिक्षित बनाना अभिभावकों का परम उद्देश्य है। समस्त छात्रों को सही ज्ञान के आलोक में रखना हमारी सरकार का लक्ष्य है, ताकि हमारे उभरते हुए बच्चे अपनी आयु, योग्यता और विद्वत्ता के बल पर व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और राष्ट्रीय उत्थान में सशक्त हो सके। इसी कारण हम अपनी संतानों की शिक्षण-व्यवस्था में पर्याप्त धन खर्च करते हैं। हमारी सरकार की ओर से काफी मदद प्राप्त होती रहती है। यहाँ तक कि निशुल्क शिक्षा प्रदान करने का सारा प्रबन्ध किया गया है।

शैक्षिक क्षेत्र में धन व्यय करना अति उचित है, परन्तु अपने बच्चों को सही ज्ञान प्रदान करके उन्हें विद्वान्, गुणवान और चरित्रवान बनाना भी हमारा परम लक्ष्य है, अन्यथा उनके पीछे धन गँवाना व्यर्थ है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम बचपन ही से अपने बच्चों को सत्य ज्ञान एवं सुसंस्कार प्रदान करें, जिन उत्तम गुणों से उनका भावी जीवन उज्ज्वल हो सकेगा।

नूतन वर्ष का आगमन हुआ और विद्यालयों में पुनः शिक्षण कार्य का शुभारम्भ हो गया। इस साल लगभग दो लाख चालीस हज़ार छात्र-छात्राएँ प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में प्रवेश हो गये हैं। हम आर्य सभा की ओर से यही कामना करते हैं कि वे स्वस्थ और बुद्धिजीवी बनकर ज्ञान-विज्ञान एवं तकनीकी क्षेत्रों में पूरी उन्नति करें और धार्मिक शिक्षा ग्रहण करके मानवमूल्य का पाठ पढ़ते जाएँ, ताकि सजनता की झलक उनके जीवन में दिखाई दे ।

विश्व में वही शिक्षार्थी चतुर माने जाते हैं, जो नवीनतम ज्ञान के साथ ही अपने धार्मिक ग्रन्थों का स्वाध्याय करने की आदत डालते हैं। क्योंकि सुशील, सुयोग्य और गुणवान बनने के लिए वैदिक विद्याओं की अति आवश्यकता होती है। हम सभी माता-पिता और शिक्षकों से निवेदन करते हैं कि वे निरन्तर अपनी संतानों को छोटी-छोटी धार्मिक पुस्तकें खरीदकर उत्सुकता पूर्वक पढ़ने के लिए प्रभाविक करें, इन्हीं सद् विद्याओं से जीवन सफल होगा और हमारा परिवार प्रगतिशील होगा ।

ईश्वर की ऐसी कृपा हो कि हमारे सभी शिक्षार्थियों और शिक्षकों का स्वास्थ्य ठीक रहे और विद्या के क्षेत्र में उन्नति करते रहें।

बालचन्द तानाकूर

गांधी बलिदान के परिप्रेक्ष्य में

गांधी जी के गुण

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न

१८९४ में एक मामले के सिलसिले में करमचन्द गांधी दक्षिण अफ्रीका गए थे । मामले में सफलता मिलते ही भारतीय आप्रवासियों के सामने दूसरी समस्याएँ सामने आयीं और गांधी जी उन समस्याओं को हल करने में लग गए। और इस प्रकार सात साल गुज़रने के बाद स्वदेश लौट रहे थे। उनके जहाज़ 'नौशेरा' को मोरिशस से होकर गुज़रना था। पर जहाज़ ने लँगर गिराया तो जहाज़ की मरम्मत कराने में दो सप्ताह लग गए। पर ज्यों ही भारत पहुँचे फिर से दक्षिण अफ़्रीका से बुलावा आया। अबकी बार जब आए तो १४ वर्ष रह गए। २१ वर्ष के अपने प्रवासकाल में जो सेवा कार्य किए, वे महात्मा कहलाने के लायक बन गए थे। जब १९१४ में हरदम के लिए भारत लौटे तो भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई चल रही थी। भारत में श्री गोपाल कृष्ण गोखले और लोकमान्य तिलक के नेतृत्व में नरमदल और गरमदल स्वतन्त्रता संग्राम में जूझे हुए थे। गांधी जी भारत की परिस्थिति से अपरिचित थे। इसलिए वरिष्ठ राजनीतिक नेताओं की सलाह पर उन्होंने एक साल तक विशाल भारत का चक्कर लगाना शुरू किया। जिसके दौरान वे महात्मा मुंशीराम द्वारा चलाए जाने वाले गुरुकुल काँगड़ी पहुँचे । वहाँ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने गांधी जी को एक सम्मान पत्र दिया जिसमें उनको 'महात्मा' शब्द से सम्बोधन किया गया था। बस, क्या था ! १९१५ से ३० जनवरी १९४७ तक महात्मा से सम्बोधन होते रहे और तब से आज तक उनकी तरह त्यागपूर्ण जीवन जीने वाले कोई महात्मा नहीं हुआ ।

L'ANNIHILATION DES PÉCHÉS

cont. from Pg 1

Avant–propos

Ces versets du Rig Veda sont parties intégrantes de notre prière quotidienne (sandhyā) que nous devons à offrir quotidiennement – le matin et le soir. C'est connu comme 'Aghamarshan Mantras' Il y en a trois au total.

Le mot Sanskrit 'Aghamarshan' est composé de deux mots : 'Agha' qui signifie 'péchés' et 'Marshan' qui signifie la destruction ou l'annihilation. 'Aghamarshan' veut dire l'annihilation des péchés.

Ces versets décrivent l'engagement total du Seigneur et son engagement dans la création et le fonctionnement de l'univers.

Il y a un point très pertinent, concernant la base-même de la philosophie védique, que l'on doit toujours retenir :

Les trois entités dans l'univers qui sont éternelles, sans commencement ni fin (incréées, qui ont existé dans le passé, qui existent maintenant et qui existeront dans le futur). Ce sont :
(i) Dieu ('Ishwara' en Hindi), (ii) L'âme ('jiv, ātmā' en Hindi), (iii) La matière primordiale ('Prakriti'en Hindi) - C'est l'élément avec lequel Dieu a créé le monde, voire, l'univers

Le Seigneur est le Maître Suprême de l'univers. Il y exerce une discipline parfaite. C'est lui seul (sans l'aide de quiconque) qui est l'architecte de cette oeuvre gigantesque, unique et merveilleuse de la création du monde. C'est lui seul qui assure le maintien et la dissolution de l'univers.

Interprétation / Anushilan

Dans le processus de la création de l'univers l'apport du Seigneur ('tapas' mot Sanskrit) est immense. Tout d'abord, de par son omniprésence, son omniscience, sa toute-puissance et sa compétence parfaite, Il établit les lois divines (le Veda) : 'Ritam' – les lois sociales et 'Satyam' les lois éternelles de la nature / de l'univers et les principes de la moralité, de la justice, de la dévotion ou de la spiritualité.

Puis, survint 'Ratri' (la nuit) – 'Ahorātri – pralaya en Hindi – la dissolution de l'univers, l'obscurité. C'est l'état où le monde entier était enveloppé d'une obscurité complète où rien n'était discernable. C'était comme une sombre nuit avec la présence de la matière primordiale à l'état élémentaire ('prakriti' en Sanskrit) en toute homogénéité.

Par la grâce du Seigneur, de cette obscurité se manifesta le 'Samudra' (mot Sanskrit) qui signifie littéralement : l'eau, la mer ou l'océan dans le ciel, mais c'est loin de là. Dans le contexte de ces versets cela décrit une vaste étendue de la matière primordiale à l'état élémentaire et en évolution dans l'espace, ressemblant à un océan qui est analogue à l'éther ou à la nébuleuse.

Ainsi survint la période de transition ('sandhikāl' en Hindi) entre la dissolution et la création de l'univers.

C'est de cette matière élémentaire primordiale (prakriti) que Dieu a créé l'univers : le ciel, le soleil, la terre, la lune, les étoiles, les planètes, les comètes et autres éléments ou forces de la nature, et les différentes formes de vie – les êtres humains, les animaux et les plantes entre autres.

En ce faisant, le Seigneur a créé l'espace et ensuite il a créé le temps – 'Samvatsar' (en Sanskrit) – l'année, le jour, la nuit, L'heure, etc., car les activités du monde ou de l'univers ne sont possibles que quand il y a ces deux facteurs réunis : l'espace et le temps.

Dans le troisième verset le Seigneur établit que la création du monde (shrishti) est toujours suivie de sa dissolution (Pralaya). C'est un cycle éternel et continu. Chaque nouvelle création se fait avec la matière primordiale (prakriti) en conformité avec les lois divines et universelles (Ritam et Satyam).

Conséquemment chaque création est similaire. Il y a le ciel, la terre, le soleil, etc tout comme dans la création précédente du monde.

Ces versets précisent que Dieu, avec sa toute puissance, son omniscience et autres compétences, a créé l'univers dans cet ordre avec une planification minutieuse. Avec son contrôle strict, sa vigilance infaillible et sa discipline parfaite, il n'y a pas de faille ou de relâchement dans la gestion de l'univers et dans l'administration de la justice dans son royaume divin – l'univers.

Cependant il y a une vérité implacable (inflexible, inexorable) dans la loi du Seigneur en ce qui concerne sa magnifique création du monde. Il y a la dissolution de cette oeuvre tant précieuse, admirable et gigantesque dans la nuit des temps. Cela démontre que rien n'est permanent dans ce monde. Tout est éphémère (tout va périr ou disparaitre un jour).

Si ce vaste monde subit la dissolution et de la destruction, on se demande quel sort est réservé à l'être humain qui n'est qu'une infime particule de poussière en face de cet immense univers. Il subira le même sort que l'univers. Il va mourir un jour. Il va tout délaisser sur cette terre : les richesses, mondaines, les parents et amis, et même son corps. Il aura à faire face à la justice divine.

Par ces versets d'Aghamarshan, le Seigneur nous transmet un message très fort pour notre salut. Il nous met en garde d'être toujours discipliné et intègre dans la vie en nous démontrant qu'il fait régner une discipline parfaite et absolue dans l'univers où il n'y a pas un seul cas de dysfonctionnement.

Il nous conseille fortement d'éviter les péchés, de ne pas nous enrichir par la fraude et la corruption, d'éviter les mauvaises fréquentations et des actes immoraux ou répréhensibles. C'est parce que tout le monde doit faire face à l'administration de la justice divine qui est impitoyable envers les coupables.

Ces versets du Rig Veda nous interpellent, nous pousse à réfléchir et à réaliser jusqu'à quel point l'ordre et la discipline parfaite du Seigneur sont indispensables au bon fonctionnement de l'univers, et contribuent énormément à l'harmonie dans la nature.

Nous devons adopter l'ordre et la discipline. Que nous cessons commettre des péchés.

HOMAGE TO ACHARYA BALDEV JI

Dr Oudaye Narain Gangoo, OSK, Arya Ratna - President Arya Sabha Mauritius

Om ashwathe vo nishadanam parne vo vasatishkritaa I
Gobhaaja itkilaasatha yatsanavatha purusham II

(YajurVeda 12.79, 35.4)

Human beings should realise that life is only transient like dew, that is - the droplets of water on leaves resulting from condensation of water vapour in the morning. They either fall off with the slightest breeze or dry out with the rising sun. And if the breeze grows into strong winds, the leaves just fall off the tree. Worldly things are after all but perishable. Throughout this lease of life we should act virtuously at all times, be inspired by learned persons, and be ever conscious of the Omnipresent in us… by our side… and around us. We should pay reverence / obeisance to Him only. By following his guidance (through the inner voice in us) we shall progress to communion with Him and enjoy eternal bliss.

Acharya Baldev Ji lived to be vibrant model as per the message imbibed in this mantra. He grew up as a kid, a youngster and a mature adult in the Gurukul environment. Aware of the fact that life is a brief passage in this world, he lived to be a guru, as defined by Maharishi Swami Dayanand Saraswati… dispelling the darkness of ignorance… enlightening the path thousands… imparted his erudition of the Vedic Dharma, undeniably a selfless service to humanity! Several of his students are in turn involved in the dissemination of this knowledge across the world.

He dedicated his whole life to study and led others to study the Veda and aarsha grantha (allied Vedic literature) as propounded by our rishis (sages of yore.) He was an ascetic in the true sense, keeping less than a bare minimum needed for survival. He lived to the rules of the various Gurukuls (centres of learning of the Vedic philosophy) and led-by-example.

With all due respect to the many sages of the Vedic age and thereafter, we may safely draw a parallel between his life and that of Guru Virjanand Ji in as much as both are better known for the achievements of their pupils:

➢ Guru Virjanand had an exemplary pupil in the name of Swami Dayanand Saraswati;

➢ Acharya Baldev had Swami Ramdeo and so many others, amongst whom many are attending to the physical / worldly needs of people such as health, education …etc. and several are treading on a spiritual quest - striving for the spiritual uplift; a sum total to realise the goals set out by our sages, namely- *Dharma, Artha, Kaama* and *Moksha*. Both efforts, if combined, would yield the physical, moral / spiritual and social uplift of humanity as advocated by Maharishi Swami Dayanand Saraswati, the founder of the Arya Samaj who rekindled the light of the Vedic Dharma at one of the darkest era of humanity.

Acharya Baldev is no more in our midst. He has through death become immortal as his works has left indelible footprints in the sands of time. He is recognised as one of the stalwarts or towering personalities of the Arya Samaj movement who carved a new destiny for people. We, Mauritians, cherish his short visit to our island in 2008 during the International Arya Mahasammelan, indeed quality time spent in our midst. His forceful discourses are still pulsating in the minds of many.

Deeds speak for themselves. The *Sarvavyaapak* (Omnipresent or All-Pervading) and Sarvajya (Omniscient or All-Knowing) is a thorough witness to our thoughts, speech and actions. Being *Nyaayakaari* (All-Just), He is bound by His own principles of justice in awarding the fruits of our *karma* (actions.)

... Devaa bhaagam yathaa purve sanjaanaanaa upaasate II (RigVeda 10.191.2) The Hindi translation in prose form reads: *Purvazon ki bhanti tum, kartavya ke maani bano.* Let us live to be meritoriously called 'descendants of sages of yore'.

Our homage to such a towering personality will be truthful only when we shall live up to his style of walking-the-talk and leading-by-example. O Lord, grant us the capacity to live up to be role-models as Acharya Baldev Ji was in his lifetime.

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

ऋषि दयानन्द संस्थान

RISHI DAYANAND INSTITUTE

(Run by Arya Sabha Mauritius)

सूचना

'धर्म भूषण', 'सिद्धान्त प्रवेश', 'सिद्धान्त रत्न', 'सिद्धान्त प्रभाकर' एवं 'सिद्धान्त शास्त्री' की पढ़ाई शनिवार १६ जनवरी २०१६ से, ९.०० से १२.०० बजे तक *अथवा* कोई अन्य दिन और समय निम्नलिखित केन्द्रों में शुरू होने जा रही है।

(१) ऋषि दयानन्द संस्थान, पाई
(२) गुडलेन्स आर्यसमाज मंदिर
(३) माहेवर्ग आर्यसमाज
(४) मोर्सेल्माँ न्यू ग्रोव, डॉ० हंसा गणेशी विद्या-मंदिर
(५) सुल्याक आर्य भवन
(६) निर्गीन भवन
(७) बो बासें आर्यसमाज
(८) अप्पर दागोच्येर आर्यसमाज
(९) संग्राम भवन, सें पोल
(१०) काच्येर मिलितेर आभेदानन्द आश्रम
(११) मोंताई ब्लाँश आर्य समाज
(१२) ग्राँ पोर सम्मेलन सभा

धर्म शास्त्र में Diploma Course प्रत्येक शनिवार को ९.०० से १२.०० बजे तक 'ऋषि दयानन्द संस्थान' माइकेल लील आवेन्यु, पाई में प्रारम्भ होने जा रहा है।

COURSES IN VEDIC PHILOSOPHY

DHARMA BHUSHAN
SIDDHĀNT PRAVESH (Certificate I)
SIDDHĀNT RATNA (Certificate II)
SIDDHĀNT PRABHĀKAR (Certificate III)
SIDDHĀNT SHĀSTRI (Certificate IV)

Arya Sabha Mauritius is pleased to inform its members, well-wishers and the public that the above courses would start on Saturday 16 January 2016 * from 09.00 a.m. to noon at the following centres :

1. Rishi Dayanand Institute, Pailles
2. Arya Samaj Mandir, Goodlands
3. Arya Samaj Mandir, Mahebourg
4. Dr Hansa Gunessee Educational Centre, Morc. New Grove
5. Arya Bhavan, Souillac
6. Neergheen Bhavan, Eau Coulée
7. Arya Samaj Mandir, Beau Bassin
8. Arya Samaj Mandir, Upper Dagotière
9. Sangram Bhawan, St. Paul
10. Quartier Militaire Abhedanand Ashram
11. Mt. Blanche Arya Samaj
12. Grand Port Sammelan Sabha

(Courses may be run on any other day as per convenience)*

The Diploma Course leading to Dharma Shastra will be run at Rishi Dayanand Institute, Michael Leal Avenue, Pailles, on Saturdays from 09.00 a.m. to noon. The teaching medium for the Diploma Course is Hindi and French.

For further information, please contact Arya Sabha Mauritius (Tel: 212-2730; 208-7504; email: aryamu@intnet.mu)

Dr Oudaye Narain Gangoo

Brahmāshram Ārsha Gurukul

Start of activities at the Vedic Centre, Trois Boutiques-Union Vale

Arya Sabha Mauritius (the Sabha) is pleased to announce the start of this new project - a unique Gurukul to train children to be the future missionaries of the Vedic philosophy.

Courses started on Friday 22 January 2016

Four youngsters of 12-15 years old have enrolled themselves on this project on the first day. Another 2 joined on Saturday 23.01.2016. The first activity was Yajna to mark the start of this new venture and the Vedārambha Sanskāra followed by inspiring guidance from Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya, Ach. V. Oomah and Pt. Khedoo.

Aims and objectives: total personality development

Besides high academic standards, due importance would also be given to soft skills, namely - self-control; character building; the universal Vedic values, social awareness, purity at the level of mind, body and spirit; awareness of various aspects of life; meditation; …etc. with a view that the student would, at the time of passing-out, stand out from the crowd by getting prepared for real life.

Those who successfully complete the program of studies will be offered full-time employment as priests/ missionaries of the Sabha.

Intake

Admissions are open initially for boys aged between 12-15 years with a penchant for spiritual development and learning of the Vedic Philosophy.

Parents interested to send their sons are kindly requested to contact the officials of the Sabha at Port Louis and fill in the application form for admission.

Teaching medium : English, French, Hindi and Sanskrit.

Days & timings : Fridays (evening) , Saturdays (full day), Sundays (morning)

Lodging, boarding and related expenses during the student's stay at the Gurukul will be on account of the Sabha.

APPEAL FOR THE FUNDING OF THE GURUKUL

Members and well-wishers are humbly requested to donate generously, for the success of this venture, indeed a new edifice for the spiritual uplift of humanity. The list of donors would be regularly published in Aryodaye.

Contact persons:

- Dr. Oudaye Narain Gangoo, President Arya Sabha Mauritius (5257 2694)
- Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanāchārya (5795 0220)
- Pt. Kaviraj Kheddoo (5760 2823)
- Ach. Virjanand Oomah (5787 2258)

अनुसंधान यात्रा का भव्य लोकार्पण

पं० मुखलाल लोकमान

आर्य सभा मोरिशस एवं ऋषि दयानन्द इंस्टीच्यूट के सहयोग से अनुसंधान यात्रा नामक पत्रिका के प्रह्लाद रामशरण विशेषांक का लोकार्पण समारोह शनिवार १९ दिसम्बर २०१५ को सम्पन्न हुआ। उस समारोह का मुख्य अतिथि पर्यावरण मन्त्री राजेश्वर दयाल और विशिष्ट अतिथि मोरिशस के पूर्व उप-राष्ट्रपति राऊफ़ बन्धन थे। इन महानुभावों के साथ-साथ डा० उदयनारायण गंगू, प्रो० सुदर्शन जगेसर, डा० अलका धनपत ईवान मॉसियल, पं० मुखलाल लोकमान और श्रीमती संगीता रामशरण - नन्कू भी मंचासीन थे।

श्रीमती संगीता नन्कू ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। सभागार भरा था, जिनमें मॉरिशस के प्रसिद्ध साहित्यकारों और लेखकों के साथ-साथ देश के गणमान्य सज्जनों ने अपनी उपस्थिति दी थी।

डा० उदयनारायण गंगू ने अपने स्वागत भाषण में 'अनुसंधान यात्रा' पत्रिका और प्रह्लाद रामशरण जी के त्यागमय जीवन का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इनका साहित्यिक जीवन आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा स्रोत बनेगा।

पं० मुखलाल लोकमान ने 'अनुसंधान यात्रा' विशेषांक का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि सभी लेखकों ने इस पत्रिका में अपने लेखों के साथ पूरा न्याय किया है। डा० ब्रजेश कुमार यदुवंशी ने अत्यन्त मार्मिक ढंग से इस विशेषांक का सम्पादन किया है।

प्रो० सुदर्शन जगेसर ने कहा कि प्रह्लाद रामशरण अपनी मेहनत और गहरे अध्ययन के बल पर भारत के उच्च कोटि के विद्वानों के साथ कदम मिलाकर चल रहे हैं।

डॉ० आलका धनपत ने कहा कि प्रह्लाद रामशरण के दर्शन किये बिना ही, उनकी रचनाओं के ज़रिये उनसे परिचित होने का उन्हें अवसर प्राप्त हुआ। इन्द्रधनुष पत्रिका के विभिन्न विशेषांकों को पढ़कर प्रह्लाद रामशरण के दूरदर्शी विचारों और हिन्दी के प्रति उनका अटूट प्रेम एवं उनकी आस्था और निष्ठा को पहचाना जाता है।

ईवान मॉरसीयल ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए बताया कि इस विशेषांक में जितने लेख हैं वे उन्हें समझ नहीं सके परन्तु आप लोगों के मुखमण्डल की चमक-दमक और हाव-भाव को देखकर ऐसा अनुभव होता है कि आप लोग प्रसन्नता के सागर में ग़ोता लगा रहे हैं। मैं भारत जैसे महान देश का दर्शन तो नहीं कर पाया परन्तु मुझमें ऐसी भावना जागती है कि मैं उस महान देश की सभ्यता ओत-प्रोत हूँ। बधाई है प्रह्लाद ! जिसकी कृपा से मुझे इतने भारतीय एवं स्थानीय लेखकों के इर्द-गिर्द भटकने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

श्री राऊफ़ बन्धन ने कहा कि मैं और प्रह्लाद रामशरण एक ही गाँव आ-मोरी के हैं। हम साथ-साथ प्राथमिक स्कूल जाते रहे। उन्होंने कहा कि उनकी रचनाओं को देखकर हम अचरज में पड़ जाते हैं कि इन्होंने अपने पारिवारिक एवं सामाजिक ज़िम्मेदारियों को निभाते हुए कितना परिश्रम किया होगा?

इसके बाद अनुसंधान यात्रा विशेषांक का लोकार्पण पर्यावरण मन्त्री राजेश्वर दयाल के कर-कमलों द्वारा किया गया।

प्रह्लाद रामशरण जी ने सभी को धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा कि आप लोगों के सहयोग को पाकर ही मैंने इतनी लम्बी यात्रा तय की है। डा० ब्रजेश यदुवंशी को कोटि-कोटि धन्यवाद समर्पित किया जिन्होंने कड़ी मेहनत करके इस विशेषांक को हमारे सामने रखा है। उन्होंने सभी सहयोगियों को धन्यवाद दिया जिनके सहयोग से उनको यह विश्व-विख्यात सम्मान प्राप्त हुआ है। उन्होंने राजेश्वर दयाल और राऊफ़ बंधन को विशेष धन्यवाद दिया जिनका सहयोग उन्हें सदा मिलता रहा है।

इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद, भारतीय उच्चायुक्त एवं इन्दिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सहयोग से १४ नवम्बर २०१५ को इन्दिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र के सभागार में स्वर्गीय दयानन्दलाल बसन्तराय के जीवन पर आधारित त्रिभाषी पत्रिका इन्द्रधनुष विशेषांक का लोकार्पण मोरिशस के प्रधान मन्त्री माननीय अनिरुद्ध जगनाथ के कर-कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ।

उस अवसर पर अनेक गणमान्य लोगों ने समारोह की शोभा बढ़ाई जिनमें प्रधान मन्त्री के साथ-साथ भारतीय उच्चायुक्त महामहिम अनूप कुमार मुदगल तथा विभिन्न संस्थाओं के अधिकारी गण और प्रतिष्ठित महानुभावों अपनी उपस्थिति दी थी।

श्रीमती रामशरण नन्कू जो इन्द्रधनुष पत्रिका की संयुक्त सम्पादिका हैं ने आगन्तुकों का स्वागत किया। उन्होंने दयानन्दलाल बसन्तराय की पाँच पुत्रियों को दीप-प्रज्वलन के लिए आमंत्रित किया जिनमें दमयन्ती, वीरमती, निरूपा, शत्रुषा और देविका थी। इसके बाद कुमारी दिशा और कुमारी लिनाक्षी जो दयानन्दलाल की पोती हैं ने नाना पर एक उच्चकोटि की कविता सुनाई।

इसके बाद इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् के अध्यक्ष एवं इन्द्रधनुष पत्रिका के निर्देशक और प्रधान सम्पादक प्रह्लाद रामशरण का भाषण हुआ। उन्होंने बसन्तराय के सादे जीवन और उच्च विचार पर गहराई से प्रकाश डाला उन्होंने बताया कि दयानन्दलाल बसंतराय प्रथम हिन्दी प्रेमी थे जिन्होंने हिन्दी का संयुक्त राष्ट्र संघ दर्ज़ा दिलाने का प्रस्ताव नागपुर के विश्व हिन्दी सम्मेलन में किया था।

फिर उमेश बसन्तराय, दयानन्दलाल के ज्येष्ठ पुत्र का भाषण हुआ। उन्होंने अपने पिता के त्यागमय जीवन पर प्रकाश डाला। मिनिस्टर के रूप में उनके कार्यकुशलता एवं हिन्दू महासभा के प्रधान की हैसियत से गंगा-तालाब में जो कार्य किया है वह चिरस्मरणीय रहेगा।

इन्द्रधनुष पत्रिका के सलाहकार एवं रामायण सेंटर के अध्यक्ष पं० राजेन्द्र अरुण हैं का भाषण हुआ। उन्होंने बसन्तराय के जीवन के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला। उनके त्यागमय जीवन, अथक समाज सेवी, हिन्दी के प्रति उनकी श्रद्धा और निष्ठा आदि।

श्रीमती वीरमती मोहादेब ने अपने पूज्य पिता के जीवन की विभिन्न संस्मरणीय झाँकियाँ प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि उनके सर्वांगिन जीवन में सामाजिक सेवा समाहित थी।

इवान मारशियल जो इन्द्रधनुष पत्रिका के संयुक्त सम्पादक और मॉरिशस प्रेस के अध्यक्ष ने अपने भाषण में बसंतराय के जीवन चरित्रों का बयान किया जो उन्होंने समाचार पत्रों में पढ़ा था।

भारतीय उच्चायुक्त महामहीन अनूप कुमार मुदगल ने कहा कि संयुक्त राष्ट्र संघ में हिन्दी को एक आधिकारिक भाषा के रूप में मान्यता दिलाने का प्रस्ताव रखकर बसन्तराय ने एकदम सराहनीय कार्य किया था।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय अनिरुद्ध जगनाथ ने बताया कि आज़ादी से पहले हुए समवैधानिक सम्मेलन में, जो लण्डन में हुआ था। वे दयानन्दलाल बसंतराय के साथ शामिल थे। सभी सामाजिक कार्यकर्ता और राजनेता उनका सम्मान करते थे भाषण के बाद उन्हीं के कर-कमलों द्वारा इस मॉरिशसीय सपूत और हिन्दी के महान सेवक पर प्रकाशित इन्द्रधनुष पत्रिका का लोकार्पण हुआ।

इन्द्रधनुष सांस्कृतिक परिषद् के उप-प्रधान और एक प्रसिद्ध चित्रकार डॉ० इन्द्रदत्त चन्नू ने बसन्तराय के एक सुन्दर चित्र श्रीमती वीरमती मोहादेब को प्रदान किया। फिर उन्होंने सभी महानुभावों को धन्यवाद दिया।

28.11.2015 : Graduation Ceremony at the Rishi Dayanand Institute

The Rishi Dayanand Institute (RDI) [formerly the DAV Degree College] hosted the 2015 Graduation Ceremony at the seat of the RDI.

The session was opened by prayers recited by Yogi Bramdeo Mokoonlall, Darshanacharya, followed by the English version, namely -

Om agne naya supathā rāye asmān vishvāni deva vayunā ni vidwān | Yuyodhyasmatjuhurānameno bhuyisthānte nama uktim vidhema ||

(YajurVeda 40/16)

O Lord. You are All-knowledge and illuminate the whole universe!

Lead us to the path of virtue for the acquisition of physical and spiritual treasures. You always inspire us to stay away from sinful acts which transgress nature and its laws. You are All-wisdom, knowledgeable of all the processes of all works - the science behind the operations of the universe as well as the rules of good governance. Grant us all these as well as the company of learned persons and sages which will lead us to the path of righteousness. We bow to you with reverence again and again.

The Chairperson of RDI, Prof. S. Jugessur congratulated Arya Sabha Mauritius for the bold venture in the Tertiary Education sector and the students who successfully completed their courses and are passing out as fresh graduates.

Dr. Oudaye Narain Gangoo, the Academic Dean of RDI, extended a warm welcome to the distinguished guests for having spared time for this ceremony, the parents of the graduands, the students and all the sponsors / well-wishers who have given a lease of life to the RDI. He highlighted salient features about the RDI :

- In line with the sixth principle of the Arya Samaj which defines its vision and mission: ***"The prime object of this society is to do good to the whole world, that is to improve the physical, spiritual and social standards of all."*** The activities of Arya Sabha Mauritius (ASM) in the field of education and social services reach the whole Mauritian population irrespective of colour, creed or religion.
- The Rishi Dayanand Institute, formerly known as the DAV Degree College, benefits from the wide international quality assurance standards of the Kurukshetra University, India (KU) since the tie-up in 2007. KU stands as a multi-faculty State University, recognized throughout the Commonwealth and ranks among the 50 best universities in India.
- ASM is duly registered with the Tertiary Education Commission (TEC) and currently licensed to run complete programmes leading to recognized degrees such as B.A and M.A (Hindi, English, Sanskrit, Philosophy and Sociology) regulated by an MOU. KU prepares the examination papers and examinations are held under the supervision of the Mauritius Examinations Syndicate (MES). The letter from TEC is explicit: *"We wish to inform you that as per the decision of the TEC Board, all academic qualifications awarded by overseas universities relating to courses accredited by TEC and offered by Post-Secondary Educational Institutions duly registered by TEC are fully recognized."*
- As Academic Dean of the RDI, he provides academic leadership. He is also responsible for (a) maintaining and promoting the efficiency and good order of the RDI, (b) ensuring academic standards in line with program requirements, (c) selecting and admitting students to the Institute, (d) planning the overall budget of RDI, (e) managing the resources and assigning duties to the staff and (f) coordinating all work undertaken by the RDI as per the approved work plan within the prevailing legal framework.
- The student population increased from 50 in 2007 to 250 in 2014. As of date 260 persons have graduated from the RDI.
- The first batch of students in Theology were enrolled in 2011. These studies are academic subjects in their own right, and are taught with a view to preparing future missionaries to serve in Mauritius and at the international level.
- The first graduation ceremony was held in September 2010 at the Octave Wiehe Auditorium, Reduit. The Chief Guest on that occasion was Professor Ram Prakash, Member of Parliament, Haryana, India. Professor Soodursun Jugessur, D.S.C, C.S.K, G.O.S.K, the then Pro-Chancellor, University of Mauritius was the special guest.
- The second and third graduation ceremonies were held at the seat of the D.A.V Degree College in 2011 and 2012. A good number of candidates received their B.A (Hons) and M.A Degrees. Diplomas were also awarded to students of Theology.
- The Fourth graduation ceremony was held on 08 December 2013 at the Octave Wiehe Auditorium.
- The fifth graduation ceremony was held at the seat of the RDI. 87 students were awarded with Degrees of BA (Hons) Hindi, BA (Hons) Philosophy, MA Hindi, MA Philosophy, Dharma Vāchaspati and Dharma Ratna in Theology.
- The sixth graduation ceremony of 28.11.2015 celebrates the passing out of 19 graduands in B.A (Hons), 19 in B.A. Hindi; 5 in B.A (Hons) English; 6 in B.A (Hons) Philosophy; 10 in M.A Hindi; 7 in M.A Philosophy; 36 in Theology (25-Shāstree and 11 Vāchaspati).
- The Board of Governors currently comprises of the people with longstanding experience in the field of education and administration. Its role is to provide the best possible education and educational opportunities for all learners; to approve the development plan, budget, monitor performance in line with the vision and mission of the RDI.
- RDI is a haven of peace where education is disseminated among students who are eager to explore the frontiers of knowledge with a lot of dedication and undertaking. It has the necessary infrastructure to offer and sustain its programmes.
- Apart from students' fees, a host of well-wishers / donors committed to the advancement of learning stand as the backbone for the smooth running of RDI. Amongst others Mrs. K. Jhummon for the college library, Mr. S.S. Vaghela for the computer lab, Late Dr. (Mrs) H. Gunessee for the extension the building of the college with ten classrooms.
- Bursaries have been offered by Dr. (Mrs) H. Gunessee, Mr. S.S. Vaghela. Mrs M. Jeetun, Mr. M. Goomany and Mr. Rakhal Bissessur.

The Academic Dean congratulated the graduates and their parents, the faculty members, the staff of RDI and ASM for their fruitful efforts as well as the members of the Pailles Arya Samaj for their continued support.

In his address Shri A. Mudgal, High Commissioner of India to Mauritius, Special Guest for the day, expressed his admiration to the works of ASM and congratulated all who have made this day a success story. He added: 'A degree is an instrument to succeed in life… not the end of the learning process… We have only been trained to use that knowledge… the training does not end here… it lasts over a lifetime… Do not be content with the piece of paper (certificate) that you are being given... We need to renew that from time to time… to come back to acquire new knowledge… to reinvent ourselves… continuous learning opens the doors to success. Do not confuse the degree to an employment letter… Ask yourself: What is that you can do? Are you valuable to society? If society miss you then it is OK. Otherwise go and relearn.'

He cited Dr. A.P.J. Abdul Kalam, former President of India and world renowned scientist: What is the purpose of universities? At entrance you ask yourself what you can do for the university. At your exit university people will ask you about what they can do for you. The builders of society did a wonderful job turning people to be creative minds… NOT copycats.

Hon. Mrs Santibai (Maya) Hanoomanjee, Speaker of the National Assembly, Chief Guest for the occasion congratulated all present for the commendable occasion. She recalled the day of her own graduation as a day with a sense of fulfilment. We need willpower, perseverance and a focused mind as the ingredients for the successful realisation of our objectives… the overcoming of obstacles… We need to be goal oriented, continuously put up the effort required… and the credit for the day also goes to you as well as the faculty of RDI.

Since 1910 ASM has been in both the formal and informal education sector. As a player in the Tertiary Education it benefits from the quality assurance benchmarks of the Kurukshetra University, a prestigious institution of the State of Haryana, India.

Education, she added, begins at home with parents teaching us the dos and don'ts of life. They mould our personality. Academic education is a key to personal and professional success. It empowers us to better face the knowledgeable competitive world. Good education goes beyond good results. It goes towards personality building and creativity of the mind. Education is to be viewed with passion and not as a load. It is a brake to indulge in bad deed.

She cited Mohamad Yunus, Nobel Laureate as a model… He taught people to be entrepreneurs… Likewise should take a pledge to be a job giver NOT a job seeker… Proper education get people prepared to address low esteem, self-confidence, interview stress, etc… The road to success starts today!!

The ceremony ended with the passing out of the graduates felicitated by the Academic Dean, the Chairperson of RDI, the Chief Guest and the audience. Dr. R. Neewoor, Hon. President of ASM stood for the vote of thanks on behalf of RDI, ASM and the Mohunlall Mohith Foundation. Mrs Sangeeta Ramsurrun-Nunkoo, Registrar at RDI acted as mistress of ceremony.

Editorial Team

सामाजिक गतिविधियाँ

एस. प्रीतम

विश्व हिन्दी दिवस २०१६

पिछले कुछ दिनों से मोरिशस में विश्व हिन्दी सचिवालय शिक्षा मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी दिवस मना रहा है। गत साल की तरह इस साल भी इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केन्द्र, फ़ेनिक्स में भव्य रूप से मनाया। इस वर्ष के अतिथि वक्ता डा० पीटर फ़्रीडलैंडर, ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी के वरिष्ठ प्राध्यापक रहे। आपने पी.एच.डी के लिए हिन्दी के मध्यकालीन कवि संत रविदास के जीवन एवं रचनाओं पर शोध किया है।

मौक़े का मुख्य अतिथि मॉरिशस गणराज्य के राष्ट्रपति महामहिम श्रीमती आमीना-गरीब-फ़ाकिम थीं। कार्य की शोभा बढ़ाते हुए शिक्षा व मानव संसाधन मंत्री माननीय लीला देवी दुकन-लछुमन एवं भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अनूप कुमार मुद्गल जी उपस्थित थे। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अन्तर्गत भारत से आये हुए श्री रामदरर्शन शर्मा की मंडली का सुन्दर प्रदर्शन हुआ। कार्यक्रम के दौरान भारत के प्रधान मंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी जी का लिखित संदेश महामहिम भारतीय उच्चायुक्त ने पढ़कर श्रोताओं को सुनाया। विदेश मन्त्री माननीया श्रीमती सुषमा स्वराज की ओर से मोरिशस के मशहूर विविध विधाओं के लेखक अभिमन्यु अनत को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

अन्त में सभी आमंत्रित जनों को भोजन से सत्कार किया गया।

पुस्तक लोकार्पण

रविवार ता० १७.०१.१६ प्रातः ९.०० बजे कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। पुरोहित थे आर्य सभा के वरिष्ठ पुरोहित धर्मेन्द्र रिकाई और आचार्य चन्द्रदेव बिहारी।

यज्ञ समाप्त होते-होते आर्य सभा के प्रधान व मंत्री क्रम से डा० गंगू और श्री एस. प्रीतम सपरिवार पहुँचे। डॉ० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ पूर्व ही पहुँचे हुए थे। लोग एक-एक करके आहिस्ते-आहिस्ते पहुँच रहे थे। देखते-देखते छोटा सा प्लेन दे रोश गाँव का आर्य मंदिर भर गया।

भाषण हुए सभा प्रधान और उपप्रधान द्वारा। डॉ० इन्द्रनाथ और पंडित धर्मेन्द्र ने श्रीमती लाछो शिवशंकर पर पुस्तक लिखने का विचार आया इस पर चन्द शब्दों में प्रकाश डाला। बहन धनवन्ती रामचर्ण ने पहली महिला स्वामी को प्रेरणा का श्रोत सिद्ध करने का अच्छा प्रयास किया।

कार्य के अन्त में अभयदेव ने समाज की ओर से विशद रूप से धन्यवाद दिया तो लाछो मौसी ने अपनी ओर से सभी उपस्थित लोगों के प्रति आभार प्रकट किया। इस प्रकार कार्य समाप्त हुआ।

I hold that the performance of Yajna is most commendable. It consists in showing due respect to the wise and the learned, in the proper application of the principles of chemistry and of physical and mechanical sciences to the affairs of life, in the dissemination of knowledge and mechanical sciences to the affairs of life, in the dissemination of knowledge and culture, in the performance of Agnihotra which, by contribution to the purification of air and water, rain and vegetables, directly promotes the well-being of all sentient creatures.

Satyartha Prakash